

मिट्टी खाकर बिल बनाने वाला केंचुआ

कालु राम शर्मा



एक दिन मैं गमले में मिट्टी भरकर पौधा लगाने जा रहा था कि मुझे एक केंचुआ दिखाई दिया। वह कुलबुलाने लगा, मानो उसे रोशनी पसन्द न हो। थोड़ी ही देर में वह मिट्टी के भीतर घुस गया। मैंने फिर से गमले की मिट्टी उथल-पुथल की। इस बार भी वह अपने नाजूक, लसलसे शरीर को कुण्डलीनुमा बनाकर सिर के बल मिट्टी में समा गया। मैं सोचने लगा, आखिर वह ऐसा क्यों करता है?

केंचुए के बिल

केंचुए कहाँ रहते हैं? इसका

आसान-सा जवाब है – मिट्टी में। मिट्टी के बिना उनका जीवन सम्भव ही नहीं है। केंचुए ऐसी मिट्टी में रहते हैं जहाँ पत्तियाँ सड़-गल रही हों। वे मिट्टी के भीतर बिल बनाते हैं लेकिन उनका बिल चूहे या चींटी के बिल जैसा नहीं होता। केंचुए के पास न तो मज़बूत दाँत होते हैं और न ही नुकीले पंजे, फिर भी वे बिल कैसे बना लेते हैं?

दरअसल, केंचुआ जहाँ से बिल बनाना शुरू करता है, वहीं से मिट्टी को खाना भी शुरू कर देता है। वह सामने आने वाली मिट्टी को खाते हुए नीचे की ओर बढ़ता जाता है।

इस तरह एक नरम और लचीली नली जैसी सुरंग बनती जाती है। जैसे अगर हम कोई नरम नली मिट्टी में घुसाएँ, तो उसके भीतर मिट्टी भरती चली जाती है – कुछ ऐसा ही केंचुए के साथ भी होता है। यानी एक-साथ दो काम – रास्ते की मिट्टी खाते जाना और बिल बनाते जाना।

जब मिट्टी के ऊपर नमी अधिक होती है, तो केंचुए के बिल उथले होते हैं। लेकिन जैसे-जैसे धूप और हवा की वजह से मिट्टी सूखने लगती है और नमी कम होती जाती है, वैसे-वैसे केंचुए और गहराई में घुसते चले जाते हैं। उनका बिल लगभग साढ़े छह फीट तक गहरा हो सकता है। सोचिए, एक नरम-सा केंचुआ कितना गहरा बिल बना लेता है!

आम तौर पर केंचुए दिन में अपने बिलों के अन्दर ही रहते हैं। वे रात में ही सड़ी-गली पत्तियाँ खाने के लिए बाहर निकलते हैं और फिर वापस बिल में चले जाते हैं। लेकिन घनघोर बरसात में, जब ज़मीन में पानी भर जाता है, तो वे दिन में भी बाहर रेंगते हुए दिखाई दे सकते हैं। जैसे ही उन्हें कोई नम ज़मीन मिलती है, वे तुरन्त फिर से उसके अन्दर घुस जाते हैं।

प्रकृति का हलवाहा

केंचुए का बिल बनाना किसानों के लिए गज़ब का वरदान है। इससे मिट्टी भुरभुरी और छेददार हो जाती है। जितनी हवा मिट्टी के अन्दर

जाएगी, मिट्टी की सेहत उतनी ही बेहतर होगी। केंचुआ जिस मिट्टी को खाता है, उसमें से सड़े-गले कण पचा लेता है और बाकी मिट्टी को विष्टा के रूप में बाहर निकाल देता है। केंचुए की यह विष्टा सेंवई जैसी दिखाई देती है और इससे मिट्टी और भी ज़्यादा भुरभुरी व उपजाऊ बन जाती है।

प्रख्यात चार्ल्स डार्विन ने केंचुओं को 'प्रकृति के हलवाहे' कहा था। एक एकड़ ज़मीन में लगभग 10,000 तक केंचुए हो सकते हैं। ये सब मिलकर एक साल में करीब 14-15 टन मिट्टी को उलट-पलट देते हैं, जिससे ज़मीन अधिक उपजाऊ बन जाती है।

कुछ विशेषताएँ

केंचुओं के पास आँखें नहीं होतीं। वे अपनी त्वचा से ही प्रकाश का आभास करते हैं और साँस भी त्वचा से ही लेते हैं। इसलिए उनकी त्वचा का नम रहना बहुत ज़रूरी होता है। अगर त्वचा सूख जाए, तो उन्हें साँस लेने में दिक्कत होने लगती है। इसी वजह से केंचुए धूप से बचते हैं और नम, अँधेरी जगहों में रहना पसन्द करते हैं।

जब बहुत ज़्यादा बारिश होती है और ज़मीन के अन्दर पानी भर जाता है, तो भी केंचुओं को साँस लेने में दिक्कत होने लगती है। इसलिए बारिश में वे दिन में भी बाहर निकल

आते हैं और ऐसी जगह ढूँढते हैं जहाँ वे फिर से ज़मीन के अन्दर घुस सकें।

दुनिया में केंचुओं की हज़ारों प्रजातियाँ पाई जाती हैं। कुछ केंचुए ज़मीन की ऊपरी सतह के पास रहते हैं, कुछ गहराई में सुरंग बनाते हैं और कुछ सड़ी-गली पत्तियों की परत में ही अपना जीवन बिताते हैं। खेतों और बाग-बगीचों में मिलने वाले केंचुए मिट्टी को उपजाऊ बनाने में सबसे ज़्यादा मदद करते हैं।

केंचुए के शरीर में नर और मादा, दोनों अंग मौजूद होते हैं। जोड़ी बनाते समय वे एक-दूसरे के साथ शुक्राणु का आदान-प्रदान करते हैं, जिससे अण्डे निषेचित हो जाते हैं। बाद में केंचुआ बिल में अण्डे दे देता

है। इन अण्डों को 'ककून' कहा जाता है। लगभग तीन हफ्तों में ककून से शिशु केंचुआ बाहर निकल आता है।

केंचुए की एक और रोचक बात यह है कि अगर कभी इसका शरीर दो हिस्सों में कट जाए, तो कई बार आगे वाला हिस्सा ज़िन्दा रह सकता है और धीरे-धीरे पिछला हिस्सा फिर से बना लेता है। हालाँकि, यह हर बार नहीं होता और यह केंचुए की प्रजाति और चोट की जगह पर भी निर्भर करता है।

चूँकि केंचुए कई जीवों का भोजन भी होते हैं, जैसे पक्षी, मेंढक और कुछ छिपकलियाँ इसलिए वे प्रकृति की खाद्य-शृंखला का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

कालू राम शर्मा (1961-2021): अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, खरगोन में कार्यरत थे। स्कूली शिक्षा पर निरन्तर लेखन किया। फोटोग्राफी में दिलचस्पी। *एकलव्य* के शुरुआती दौर में धार एवं उज्जैन के केन्द्रों को स्थापित करने एवं मालवा में विज्ञान शिक्षण को फैलाने में अहम भूमिका निभाई।

यह उनकी अप्रकाशित रचना है।

केंचुओं पर *संदर्भ* में प्रकाशित अन्य लेख पढ़िए- तौबा ये मतवाली चाल (अंक-19, सितम्बर-अक्टूबर, 1997), केंचुए में प्रजनन (अंक-24-25, जुलाई-अक्टूबर, 1998), जीवजगत में उभयलिंगता (अंक-76, जुलाई-अगस्त, 2011), उभयलिंगी जीव - नर भी और मादा भी (अंक-160, सितम्बर-अक्टूबर, 2025)।